वर्ष 1 अंक 1 अक्टूबर 2017

इतिहास समाचार

रंगश्री / Creative History (इतिहास ट्रस्ट) की गतिविधियों का मुखपत्र

इतिहास समाचार भारतीय ज्ञान की परंपरा, लोक स्मृति, कला, सामाजिक विकास, ग्रामीण इतिहास और ऐतिहासिक आन्दोलन आदि के आकलन एवं संकलन-संयोजन के लिए कार्यरत रंगश्री/ Creative History (इतिहास ट्रस्ट) से संबद्ध लोगों की गतिविधियों का मुखपत्र है। यह लोक, ग्रामीण समाज, कृषक जीवन, संस्कृति, उपेक्षित समुदाय और इतिहास के उन पक्षों के दस्तावेजीकरण के लिए प्रतिबद्ध है, जिसे अमहत्त्वपूर्ण मानकर छोड़ दिया जाता है।

संपादक-मण्डल

डॉ. रश्मि चौधरी, डॉ. दीपक कुमार राय, महेंद्र प्रसाद सिंह, डॉ. गणपत तेली, डॉ. उज्ज्वल आलोक

विशेष परामर्श

नागेंद्र नाथ ओझा, डॉ. देवेंद्र चौबे, डॉ. बद्रीनारायण, कुमार नयन, डॉ. हितेंद्र पटेल, डॉ. मणिन्द्र नाथ ठाकुर, डॉ. अख़लाक़ अहमद आहन, अनिल कुमार गोयल, हरिश्चंद्र शर्मा, डॉ. सूर्य कुमार सिंह, देश निर्मोही, समदर्शी संजय, अनिल कुमार पाठक, रमाकांत उपाध्याय, डॉ. कुमार कौस्तुब, वृजभूषण चौबे

सह-संपादक/ कॉपी एडिटर

डॉ. देविना अक्षयवर, डॉ. अजय कुमार यादव, डॉ. मीनाक्षी, प्रियंका, प्रदीप कुमार, मेघा रावत

विशेष सहयोग

डॉ. नूरजहाँ मोमिन, डॉ. संतोष भारद्वाज, डॉ. गौतम चौबे, जितेंद्र यादव, निशा लोहमोड़, डॉ. मधुलिका बेन पटेल, नीलमणि भारती, डॉ. सरफराज अहमद, डॉ. खुशी पटनायक, राहुल शर्मा, सुमेध खुशालराव हाडके, कुमारी सीमा, सत्येंद्र कुमार, शकील अंसारी, कुमारी शशि, संजय कुमार, श्याम जी चौबे, अखिलेश पांडेय

*संपादन/संचालन/परामर्श/सहयोग पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक

आगामी आयोजन

इतिहास के सौ वर्ष

Hundred Years of History

दसवाँ कुँवर सिंह स्मृति व्याख्यान : 2017

पाँचवाँ बक्सर ग्रामीण इतिहासकार–लेखक सम्मलेन एवं रामायण चौबे स्मृति लोक व्याख्यान : 2017

7–10 नवंबर 2017, प्रातः 11 बजे से

स्थान– अहिरौली (शाम 4 बजे से), चौसा, कथकौली और बक्सर (बिहार)

इतिहास की ताकत है स्मृतियाँ और जनश्रुतियाँ

इतिहास और लोक स्मृतियों पर चर्चित लेखक एवं जे. एन. यू. में प्रोफेसर देवेंद्र चौबे से प्रभात खबर के पत्रकार अजय कुमार की बातचीत। इसके कुछ अंश लेख के रूप में 23 मार्च 2015 ई. को प्रकाशित हो चुके हैं।

इतिहास एक गंभीर विधा है। हाल के वर्षों में इसे कई तरह से समझने के प्रयास होते रहे हैं। खासकर, तब; जब लोक में मौजूद स्रोत अधिक ताकतवर होते गए हैं। आप इसे किस तरह देखते हैं?

इतिहास कोई स्थिर नहीं; बल्कि, एक गतिशील विधा है। सामाजिक परिवर्तन और विकास के साथ इतिहास में मौजूद तथ्य विश्लेषण, पुनर्मूल्यांकन और पुनर्लेखन की माँग करते हैं। यद्यपि राजसत्ताओं एवं उनसे जुड़े इतिहासकार इतिहास को हमेशा एक स्थिर विधा बनाए रखने की कोशिश करते रहते हैं। इसलिए सत्ता अथवा मुख्यधारा के इतिहासकार सत्ता-तंत्र द्वारा एकत्रित दस्तावेजों एवं आँकड़ों के आधार पर इतिहास लेखन करते रहते हैं। चाहे वे औपनिवेशिक-साम्राज्यवादी इतिहासकार हों या राष्ट्रवादी अथवा मार्क्सवादी। यद्यपि मार्क्सवादी इतिहासकारों ने सत्ता-तंत्र द्वारा उपलब्ध दस्तावेजों के समानांतर जनांदोलनों आदि की भी बारीकी से अध्ययन करते हुए उनकी उपस्थिति को इतिहास का हिस्सा बनाया है। लेकिन मुख्यधारा के समानांतर समाज की जो पहल, प्रतिरोध, सर्जनात्मकताएँ आदि रहीं, वे कभी भी उसका हिस्सा नहीं बन पाईं। पर, उनकी जगह हमेशा स्मृतियों और जनश्रुतियों में बनी रही। जीवन और समाज इनसे प्रभावित रहा। लेकिन, मुख्यधारा के इतिहासकारों के लिए

पहला सम्मेलन

अलग होता है लोक समाज का इतिहास –नागेन्द्र नाथ ओझा, राजनीतिक चिंतक एवं पूर्व सांसद

बक्सर : “लोक समाज के इतिहास पर बात करना इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण कार्य और दायित्व है। इतिहास की जो अनंत धाराएँ होती है, उनका गहरा सम्बन्ध मानव समाज की उन ऐतिहासिक परम्पराओं से होता है जिनसे समाज बनता है। उसमें अंधविश्वास भी है और यथार्थ भी। वैज्ञानिक विचारधाराएं लोक में मौजूद सच्ची धारणाओं को समझने में मदद कराती हैं।” ये बातें पिछले दिनों अहिरौली में इतिहास और लोकसमाज पर आयोजित पहला बक्सर ग्रामीण इतिहासकार लेखक सम्मेलन 2013 में छठा कुँवर सिंह स्मृति व्याख्यान देते हुए पूर्व सांसद नागेन्द्र नाथ ओझा ने कही। पहला रामायण चौबे स्मृति ग्रामीण लोक व्याख्यान देते हुए इतिहासकार दीपक राय ने कहा कि “जहाँ मुख्य इतिहास चूक जाता है, वहाँ लोक में मौजूद चेतनाएँ हमारी मदद करना शुरू कर देती है।” सम्मेलन के प्रारम्भ में लेखक देवेंद्र चौबे ने कहा कि “आज भी मुख्यधारा के इतिहास में समाज का वह इतिहास अनुपस्थित है जो गाँवों और कस्बों में बिखरा है।” सम्मेलन में सुरेश कांटक, कुमार नयन, श्री भगवान् पांडेय, धनुलाल, साबित रोहतश्वी, मोहम्द शफी, मुकुल, सोहैल सहित कृष्णानंद चौबे, चन्द्रदेव मिश्र, शेषनाथ चौबे, कृष्णा नन्द उपाध्याय, विद्याशंकर चौबे, रविकांत, श्याम जी, बहादुर जी आदि ने भाग लिया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में नागेन्द्र नाथ ओझा एवं विद्यादान इंस्टिट्यूट के निदेशक सूर्य कुमार सिंह द्वारा गाँव की बुजुर्ग श्रीमती मोनाको देवी को सम्मानित किया गया । इस अवसर पर बड़ी संख्या में गाँव के लोग उपस्थित थे।

ये हमेशा कम महत्त्व की वस्तु अथवा तथ्य बने रहे। ये कभी प्राथमिक अथवा द्वितीयक स्रोत नहीं बन पाए। परिणाम यह हुआ कि कभी भी इतिहास पूरे समाज का इतिहास या 'पूरा इतिहास' नहीं बन पाया। वह हमेशा अधूरा इतिहास ही रहा।

जैसे?

यह इतिहासकारों पर निर्भर करता है कि वे जनसमाज में मौजूद लोक स्मृतियों को इतिहास का हिस्सा बनाये या नहीं। पर, स्थितियाँ हमेशा एक-सी नहीं रहतीं। इतालवी इतिहासकार अन्तोनियों ग्राम्शी (1851–1935) का *सेलेक्शन्स फ्रॉम द प्रिजन नोटबुक्स* उनके निधन के बाद जब सामने आया एवं उसमें उन्होंने समाज और सामाजिक परिवर्तन को समझने-व्याख्यायित करने की प्रक्रिया में वर्चस्व को राजनैतिक, बौद्धिक और नैतिक नेतृत्व के रूप में पारिभाषित किया, तब जाकर इतिहास के एक कोने में सामाजिक समूहों के हितों, इच्छाओं एवं उनकी क्रियात्मकता को महत्त्व मिला। कारण, यह प्रभुवर्ग की वर्चस्व की संस्कृति के समानांतर समाज की सामूहिक सोच एवं उसकी संस्कृति को महत्त्व देता है।

भारत में इस प्रकार के इतिहास लेखन का स्वरूप कैसा रहा है? किन इतिहासकारों ने इसे गंभीरता से समझने का प्रयास किया है?

भारतीय इतिहासकारों में रणजीत गुहा जैसे इतिहासकार 1857, 1942 या अन्य राष्ट्रवादी आन्दोलनों की चर्चा करते हैं तो साफ कहते हैं कि उसमें नेतृत्व कभी भी जननायकों के पास नहीं रहा। हमेशा अभिजात्य वर्ग के नेताओं ने आन्दोलनों का नेतृत्व किया। परिणाम यह हुआ कि ज्योंही आन्दोलन समाप्त हुआ, आम जन और उसकी सोच सत्ता वर्ग के लिए किसी महत्त्व की नहीं रह गई। अभिजात्य सोच को महत्व मिला और जनसमाज के महत्त्व की चीजें हाशिये पर जाती गईं। मुख्यधारा के इतिहासकारों ने भी जनभाषा में मौजूद बारीकियों को समझने का प्रयास नहीं किया।

बिहार, खासकर बक्सर क्षेत्र के इतिहास को इस संदर्भ में किस प्रकार देखा जा सकता है?

अगर आप पिछले सौ वर्ष के बिहार अथवा अन्य प्रदेशों के इतिहास को देखें तो साफ पता चलेगा कि इतिहास लेखन में जनश्रुतियाँ या लोक समाज में मौजूद जो तथ्य हैं, उसे इतिहास की मुख्यधारा में लाने के प्रयास कम हुए हैं। इसीलिए, आज भी गाँवों-कस्बों आदि में फैले इतिहास के ऐसे अनेक स्रोत मिल जायेंगे, जिनसे एक नया इतिहास बन सकता है। इस प्रसंग में, बक्सर क्षेत्र में हुए युद्धों को देखा जा सकता है, जिसका प्रभाव और उसकी स्मृतियाँ आज भी चौसा, कथकौली, जगदीशपुर, नदांव, अहिरौली, चुरामनपुर आदि गाँवों में देखी जा सकती है, जहाँ की जनता मुख्यधारा के समानांतर एक अलग इतिहास को जी रही है। खासकर, 26 जून 1539 के चौसा-युद्ध के शेरशाह; 23 अक्टूबर 1764 के बक्सर-युद्ध के मीर कासिम आदि के साथ ही कथकौली के सैयद अब्दुल गुलाम और अब्दुल कादिर रहमतुल्लाह आदि; 1857 के संघर्ष के कुँवर सिंह; सन् 42 के बद्री सिंह बागी सहित अहिरौली के 'संन्यासी बाबा' जैसे क्रांतिकारी समाज सुधारकों की छवियाँ आज भी बक्सर से लेकर जगदीशपुर क्षेत्र में फैली हुई हैं। लोक मानस पर उसका गहरा असर है। इसी प्रकार, बक्सर क्षेत्र में होनेवाले पंचकोशी परिक्रमा का संबंध सिद्धाश्रम के पाँचों ऋषियों से है जिसमें बड़े पैमाने पर स्त्रियों की भागीदारी होती है। कारण, उसका गहरा संबंध स्त्री जीवन और ज्ञान के इतिहास के साथ होना है। कहना न होगा कि इस प्रकार के स्रोत इतिहास के खोये हुए ध्रुवों को जोड़ने में भी मदद करते हैं।

यानी कि इतिहास का लक्ष्य कुछ और है?

दरअसल, इतिहास का मुख्य लक्ष्य मनुष्य, समाज अथवा उसकी सामूहिक स्मृतियों के दस्तावेजीकरण से हैं जिसकी निर्मिति कोई भी समाज एक लंबे अंतराल में कठिन संघर्ष के बाद अर्जित करता है। इसमें उस समाज की भाषा, संस्कृति, धर्म, कानून, इच्छाएँ, आकांक्षाएँ, सपने, जातीय स्मृतियों आदि की बड़ी भूमिका होती है। उनका व्यवस्थित अध्ययन भी उस समाज के इतिहास बनाने का ही अध्ययन है। इसीलिए वह लोक समाज उस इतिहास को जीते रहता है तथा परंपरा से अर्जित अनुभवों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी लोकभाषाओं में दर्ज पाठों एवं स्मृतियों आदि के जरिये आने वाले अपने नए समाज में हस्तांतरित करते रहता है।

[नोट : लोक स्मृति और इतिहास पर केन्द्रित इस कार्य/बातचीत के लिए लेखक UPE-II (JNU) का आभारी है।]

वार्षिक आयोजन

कुँवर सिंह स्मृति व्याख्यान

इतिहास के बिखरे हुए पन्नों को समेटना रंगश्री / Creative History (इतिहास ट्रस्ट) की एक महत्त्वपूर्ण योजना है। इसी क्रम में रंगश्री द्वारा इतिहास से संबंधित विषयों पर आयोजित कुँवर सिंह स्मृति व्याख्यान एक महत्त्वपूर्ण आयोजन है जिसके तहत अबतक नौ व्याख्यान आयोजित हो चुके हैं। वर्ष 2005 से शुरू हुए इस व्याख्यान में अबतक दिल्ली में 2005 में दीपक कुमार (प्रथम व्याख्यान), रामशरण जोशी; दिल्ली में 2006 में मैनेजर पाण्डेय, एम. एच. कुरैशी, अरुण कौल; आरा में 2007 में बद्रीनारायण, दुर्गविजय सिंह; दिल्ली में 2008 में ओमप्रकाश वाल्मीकि, अभिजीत पाठक, अरुण त्रिपाठी; बक्सर में 2009–10 में प्रेमकुमार मणि, सुरेश कांटक; उदयपुर में 2011–13 में नन्द चतुर्वेदी, माधव हाड़ा; बक्सर में 2014 में सीमा पटेल, देवेंद्र चौबे; अरियावं (डुमरांव) में 2015 में सूर्य कुमार सिंह, नागेंद्र नाथ ओझा और दिल्ली में 2016 में मणिन्द्र नाथ ठाकुर एवं चित्रा मुदगल व्याख्यान दे चुके हैं। रश्मि चौधरी द्वारा परिकल्पित इस व्याख्यान के आयोजन में महेंद्र प्रसाद सिंह एक सार्थक भूमिका निभाते हैं।

रामायण चौबे स्मृति लोक व्याख्यान

बक्सर ग्रामीण लेखक-इतिहासकार सम्मेलन की तरह ही ग्रामीण इतिहास से संबंधित विषयों पर आयोजित यह रंगश्री / Creative History (इतिहास ट्रस्ट) का एक महत्त्वपूर्ण आयोजन है जिसके अंतर्गत अबतक चार आयोजन हो चुके हैं। प्रतिश्रुति और विद्यादान इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के सौजन्य से वर्ष 2013 में शुरू हुए इस लोक व्याख्यान में अहिरौली, बक्सर में 2013 में दीपक कुमार राय (प्रथम व्याख्यान), नागेंद्र नाथ ओझा; 2014 में सुरेश कांटक, कुमार नयन; अरियावं (डुमरांव) में 2015 में फौद्दार माँझी, सूर्य कुमार सिंह; दिल्ली में 2016 में हितेंद्र पटेल और चित्रा मुदगल व्याख्यान दे चुके हैं। रश्मि चौधरी द्वारा परिकल्पित इस व्याख्यान के आयोजन में देवेंद्र चौबे और दीपक कुमार राय एक सार्थक भूमिका निभाते हैं।

बक्सर ग्रामीण लेखक-इतिहासकार सम्मेलन

ग्रामीण इतिहास से संबंधित विषयों पर आयोजित यह रंगश्री / Creative History (इतिहास ट्रस्ट) का एक महत्त्वपूर्ण आयोजन है जिसके अंतर्गत अबतक प्रतिश्रुति और विद्यादान इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के सौजन्य से चार आयोजन हो चुके हैं। इस

सम्मेलन की परिकल्पना रश्मि चौधरी, देवेंद्र चौबे एवं दीपक कुमार राय द्वारा वर्ष 2010 में की गई थी जिसका आयोजन बक्सर में 'इतिहास, साहित्य और समकालीन विचारधाराएँ' नाम से हुआ था। पूर्व सांसद नागेंद्र नाथ ओझा, विधान परिषद् के सदस्य और लेखक प्रेमकुमार मणि, देवेंद्र चौबे, सुरेश कांटक, कुमार नयन, दीपक राय, आर. के. दूबे, देश निर्मोही, गणपत तेली, वीणा सुमन, गजेंद्र पाठक, पत्रकार शशांक शेखर, पंकज कुमार राय, रामविलास मिश्र, चंद्रदेव मिश्र, कृष्णानंद चौबे, मोहन जी उपाध्याय, कृष्णानंद उपाध्याय, फौद्दार माँझी, परवेज आलम, लक्ष्मीकांत मुकुल, शशांक शेखर, कृष्ण मुरारी राय, यतींद्र चौबे, श्रीकृष्ण चौबे, देवकीनंदन मिश्रा, श्याम जी, बहादुर जी, श्री भगवान पांडेय, धनुलाल, साबित रोहतश्वी, मोहम्मद शफी, सोहैल, रविकांत सहित बड़ी संख्या में लोग भाग लेते रहें हैं। वर्ष 2010 में शुरू हुए इस कार्यक्रम में अबतक चार आयोजन हो चुके हैं, जिनमें 2013 में इतिहास और लोक समाज, 2014 में बक्सर युद्ध के 250 वर्ष पूरे होने पर ग्रामीण इतिहास, 2015 में मेरा गाँव, मेरा इतिहास और 2016 में ग्रामीण इतिहास मुख्य है ।

पारंपरिक ज्ञान : पंचकोशी परिक्रमा

बिहार के बक्सर क्षेत्र का पंचकोशी परिक्रमा पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। पहले दिन अहिरौली में गौतम ऋषि एवं अहिल्या स्थान से शुरू होनेवाले इस मेले का क्रमशः

दूसरा, तीसरा, चौथा, और पाँचवाँ पड़ाव होता है : नदांव (देवर्षि नारद का आश्रम), भभुअर (भार्गव ऋषि), नुआंव (वीर हनुमान की माता अंजनी का आश्रय/उदालक ऋषि) और बक्सर (महर्षि विश्वामित्र)। ऐसी मान्यता है कि पंचकोशी परिक्रमा से अहिरौली में बुद्धि, नदांव में मन, भभुअर में चित्त की शुद्धि, नुआंव में अहंकार और चरित्रवन में परमात्मा से मिलन होता है। कहते है कि ताड़का वध के बाद श्री राम ने सिद्धाश्रम के पाँचों ऋषियों के आश्रमों की यात्रा की थी। इस मेले में बड़ी संख्या में महिलाएँ आती हैं और भोजन के रूप में क्रमशः पुआ-पकवान एवं कढ़ी-बड़ी, खिचड़ी-चोखा, दही-चूड़ा, सत्तू-मूली और लिट्टी-चोखा ग्रहण करती हैं।

आधुनिक भारत के इतिहास लेखन के कुछ साहित्यिक स्रोत का लोकार्पण

पिछले दिनों जे.एन.यू. के कन्वेंशन सेंटर में प्रसिद्ध आलोचक मैनेजर पांडेय, कथाकार चित्रा मुदगल, जे.एन.यू. कुलपति एम. जगदीश कुमार, भाषा संस्थान की

डीन रेखा वी. राजन, भारतीय भाषा केंद्र के अनवर पाशा और वीमेंस एसोसिएशन की अध्यक्षा श्रीमती लक्ष्मी कुमार ने रश्मि चौधरी और देवेंद्र चौबे की किताब *आधुनिक भारत के इतिहास लेखन के कुछ साहित्यिक स्रोत* (सं. गणपत तेली, देविना अक्षयवर एवं खुशी पटनायक) का लोकार्पण किया। इस अवसर पर प्रकाशन संस्थान के निदेशक हरिश्चंद्र शर्मा भी उपस्थित थे।

ग्रामीण इतिहास : मार्क ब्लॉख

फ्रांस के मार्क ब्लॉख (1888–1944) उन इतिहासकारों में से हैं जिन्होनें इतिहास लेखन में 'समग्र इतिहास' की धारणा प्रस्तुत करते हुए बताया कि इतिहास का लक्ष्य है, मनुष्य की समस्त गतिविधियों का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करना जिसमें सभी जनसमुदायों और उनकी जीवन शैली, आचार-विचार, प्रथाओं और विश्वासों आदि का दस्तावेजीकरण हो। *फ्यूडल सोसाइटी*, *द हिस्टोरियन क्राफ्ट* आदि के लेखक ब्लॉख ने 1921 में प्रकाशित पुस्तक *फ्रेंच रूरल हिस्ट्री* में लिखा है कि गाँव के सामाजिक इतिहास में कृषक जीवन, खेत के आकार, हल के प्रकार, हल में जानवरों की जुताई, जलचक्की और पनचक्की के विकास, खेत की प्रणाली, खाद डालने की प्रक्रिया आदि का ऐतिहासिक दृष्टि से विश्लेषण करते हुए दास प्रथा की समाप्ति और भूदास प्रणाली में हुए संशोधनों पर बात करना जरूरी है। लुसियन फेब्रे (1878–1956) उनके अभिन्न इतिहासकार मित्र रहे हैं।

AAJ इतिहासकार सम्मेलन और एल्युमनी लाइब्रेरी का उद्घाटन

पिछले दिनों एल्युमानी एसोसिएशन ऑफ जे एन यू की ओर से 'हमारे समय में इतिहास' विषयक एक परिसंवाद का आयोजन हुआ; जिसमें माखनलाल, रिजवान कैसर, हितेंद्र पटेल, सईद मुबीन जेहरा, ज्योति अटवाल, सविता झा खान, रश्मि चौधरी आदि सहित देश के जानेमाने इतिहासकारों ने भाग लिया। इस अवसर पर AAJ Library (JNU Alumni Library) का उद्घाटन AAJ के अध्यक्ष देवेंद्र चौबे, एल्युमनी अफेयर्स की मुख्य सलाहकार के. पी. विजयलक्ष्मी सहित आमंत्रित अतिथियों ने किया।

रंगश्री द्वारा 1857 पर केंद्रित *'सुराज'* का मंचन और परिसंवाद

पिछले दिनों प्रसिद्ध रंगकर्मी महेंद्र प्रसाद सिंह के निर्देशन में देवेंद्र चौबे द्वारा लिखित कुँवर सिंह पर केंद्रित नाटक *'सुराज'* का मंचन जे.एन.यू में किया गया, जिसमें सौमित्र वर्मा, अखिलेश पांडेय आदि कलाकारों ने मुख्य भूमिका निभाई। मंचन के पूर्व 1857 का महत्त्व पर केंद्रित परिसंवाद में प्रसिद्ध आलोचक प्रो. मैनेजर पांडेय, इतिहासकार सुचेता महाजन, रश्मि चौधरी, आलोचक रामबक्ष, फारसी के विद्वान अख़लाक़ अहमद आहन, मॉरीशस के उच्चायुक्त डॉ. आर्य कुमार जोगेसर एवं मैथिली-भोजपुरी अकादमी के उपाध्यक्ष श्री अजीत कुमार दूबे सहित गणपत तेली, संदीप सौरभ, विजय सिंह, शुभ्रा आदि ने भाग लिया।

उपलब्धियाँ

पिछले दिनों रंगश्री और इतिहास ट्रस्ट से सम्बद्ध प्रसिद्ध आलोचक मैनेजर पांडेय, रंगकर्मी महेंद्र प्रसाद सिंह, कवि अख़लाक़ अहमद आहन (दिल्ली सरकार), कथाकार सुरेश कांटक, कवि कुमार नयन (बिहार सरकार) को साहित्य, कला और रंगकर्म के क्षेत्र में दिए गए योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

इतिहास : सन् 1917 का महत्त्व

भारतीय और विश्व इतिहास में 1917 का बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। आज से सौ वर्ष पूर्व इसी साल महात्मा गाँधी ने बिहार के चंपारण में नील की खेती करनेवाले किसानों के प्रति अंग्रेजों के शोषण और दमन के विरोध में सत्याग्रह किया था। 1917 में ही रूस के क्रांतिकारी नेता लेनिन के नेतृत्व में प्रसिद्ध अक्टूबर क्रांति हुई थी जिसके बाद जारशाही का अंत हुआ और वहाँ मजदूरों की सरकार बनी। इस क्रांति के बाद ही नयी सरकार ने 'निजी भू-संपत्ति' को समाप्त कर दिया और घोषणा की कि "भूमि संपूर्ण राष्ट्र की संपत्ति है।"

किताबें

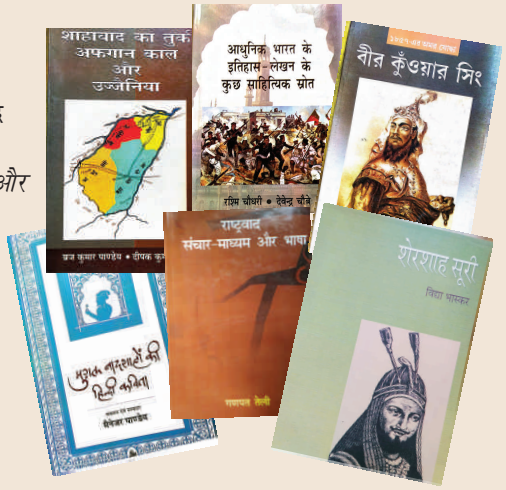

मुग़ल बादशाहों की हिन्दी कविता : मैनेजर पांडेय (राजकमल प्रकाशन), *आधुनिक भारत के इतिहास लेखन के कुछ साहित्यिक स्रोत* : रश्मि चौधरी, देवेंद्र चौबे (प्रकाशन संस्थान), *वीर कुँवर सिंह* : रश्मि चौधरी, (प्रकाशन विभाग), *राष्ट्रवाद संचार-माध्यम और भाषा* : गणपत तेली (प्रकाशन संस्थान), *शाहाबाद का तुर्क अफगान काल और उज्जैनिया* : ब्रज कुमार पांडेय, दीपक कुमार राय (अभिधा प्रकाशन), *शेरशाह सूरी* : विधा भास्कर(एन बी टी)

आगामी प्रकाशन

*ग्रामीण इतिहास**

संपादक : देवेंद्र चौबे, दीपक कुमार राय, रश्मि चौधरी

खंड और उसके लेखक: भाग : 1 : *अवधारणा एवं सन्दर्भ* : देवेंद्र चौबे और दीपक कुमार राय / भाग : 2 : *ग्रामीण इतिहास का स्थानीय (बक्सर क्षेत्र: चौसा, कथाकौली, दिनारा, अहिरौली आदि) सन्दर्भ* : रश्मि चौधरी, सीमा पटेल, सुरेश कांटक, लक्ष्मीकांत मुकुल, कुमार नयन, पंकज भारद्वाज, परवेज आलम, शकील अहमद, फौद्दार माँझी, यतीन्द्र चौबे और कृष्णा नन्द चौबे / भाग : 3 : *ग्रामीण इतिहास : वैचारिक सन्दर्भ* : सरफराज अहमद, नूतनश्री, वीणा सुमन और मधुलिका बेन पटेल / भाग : 4 : *ग्रामीण इतिहास का राष्ट्रीय सन्दर्भ* : हरिराम मीणा : पश्चिम भारत, जूरी बोराह बोरगोहेन, जाहिदुल दीवान : पूर्वी भारत, पी रवि : दक्षिण भारत, एस. आर. हरनोट : उत्तर भारत और कश्यप दीपक / भाग : 5 : *ग्रामीण इतिहास का वैश्विक सन्दर्भ* : वाङ ली : चीन, हिरोको नाका : जापान और देविना अक्षयवर : मॉरिशस [*प्रकाशक : प्रकाशन संस्थान, दिल्ली]

ग्रामीण इतिहास कार्यशाला

ग्रामीण इतिहास कार्यशाला का आयोजन लगभग प्रतिवर्ष किसी-न-किसी गाँव में किया जाता है। बक्सर क्षेत्र में होनेवाली इस कार्यशाला के संपर्क सूत्र हैं : डॉ. रश्मि चौधरी, डॉ. देवेंद्र चौबे, डॉ. दीपक कुमार राय, कुमार नयन, डॉ. गणपत तेली, कृष्णा नन्द चौबे और परवेज आलम।

फोन: 9868272999, 9431433478 एवं 9868967552
ई-मेल: creativehistorygroup@gmail.com

रंगश्री / Creative History (इतिहास ट्रस्ट), नई दिल्ली के लिए रश्मि चौधरी और अखिलेश कुमार पांडेय द्वारा प्रकाशित और स्वाति कम्युनिकेशन द्वारा मुद्रित मोबाइल : 09213132174

गाँधी और गाँधी की जनधारा

रश्मि चौधरी, इतिहासकार

ऐतिहासिक दृष्टि से भारतीय राष्ट्रवाद के विकास के गाँधी काल (1917–1947) में एक तरफ जहाँ महात्मा गाँधी शीर्ष स्थान पर दिखाई पड़ते हैं, वहाँ दूसरी तरफ देश की आम जनता अंग्रेजी राज के खिलाफ दिखाई पड़ती है। इन सबके समानांतर विपिनचंद्र पाल, तिलक और लाला लाजपतराय जैसे उग्र राष्ट्रवादियों के संघर्षों से प्रभावित भगतसिंह और सुभाषचन्द्र बोस जैसे क्रांतिकारियों की भी एक सशक्त धारा दिखाई पड़ती है, जो राष्ट्र मुक्ति के लिए कुछ भी करने को तैयार थी। पर सबसे महत्त्वपूर्ण बात है प्रथम विश्वयुद्ध की शुरुआत के बाद गाँधी का स्वाधीनता आंदोलन में प्रवेश तथा आम जनता का उनसे जुड़ाव। क्योंकि 1915 में दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद गाँधी अहमदाबाद में साबरमती आश्रम (1915) की स्थापना करते हैं तथा बिहार के चंपारण के नील की खेती करने वाले किसानों-मजदूरों (1917) और अहमदाबाद के कपड़ा मिल के कामगारों (1918) के माध्यम से कुछ ऐसे ठोस काम करते हैं, जो उन्हें आम जनता के बीच लोकप्रिय बनाता है।

इसीलिए, स्वाधीनता आन्दोलन में गाँधी का आगमन एक बड़ी घटना के रूप में देखा जाता है। इतिहासकारों का मानना है कि गाँधी सिर्फ मध्यमवर्गीय और साधन सम्पन्न भारतीय जनता का ही स्वाधीनता आंदोलन में नेतृत्व नहीं करते हैं, बल्कि कृषक जनता का भी नेतृत्व करते हैं तथा स्वाधीनता आंदोलन में उन्हें भागीदार बनाते हैं। यद्यपि गाँधी के सपनों के भारत में उस समाज की तस्वीर दिखाई पड़ती है, जो गाँव में रहता है और अपनी पारंपरिक सभ्यता, संस्कृति और स्वाधीनता बोध में एक अच्छे नागरिक का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करता है, परंतु मुख्य बात है उनके सपनों के भारत में "पृथ्वी पर एक ऐसे स्वर्ग" की परिकल्पना, जो न किसी का गुलाम होगा और न ही किसी पर निर्भर करेगा। इसके लिए स्वावलंबी होना जरूरी है। इसीलिए, चरखा को लेकर गाँधी की विचारधारा जनता के बीच आर्थिक स्वाबलंबन का संदेश लेकर आती है। उदाहरणार्थ– *मान गाँधी के बचनवा दुखवा हो जइहें सपनवा। तन से उतार कपड़ा बिदेसी, खद्दर के कइल धरनवा।* (अर्थात् गाँधी की बातों से प्रभावित जनता अपने तन से विलायती कपड़ा उतारकर, खादी का वस्त्र पहन लेती है।)

यह गाँधी का लोक पर प्रभाव ही है जिसे जनता नेतृत्व के रूप में स्वीकारती है। यही कारण है कि 1917 में चंपारण सत्याग्रह में गाँधी को जो महत्त्व मिलता है उसका दूरगामी प्रभाव स्वाधीनता आंदोलन पर पड़ता है तथा देश और जनता उनके नेतृत्व में 1947 में गुलामी से मुक्त होता है।

इतिहास समाचार में सर्जनात्मक इतिहास से संबंधित गतिविधियों, उपलब्धियों और समाचारों आदि को प्रकाशनार्थ निम्नलिखित पते अथवा ई-मेल पर भेजा जा सकता है :

रंगश्री / Creative History (इतिहास ट्रस्ट)
रंगश्री हाऊस, 72, पॉकेट-4, सेक्टर-12, द्वारका,
नई दिल्ली-110078
34/1, फ्लैट-E-1, डेसू रोड, महरौली, नई दिल्ली-110030
E-mail: creativehistorygroup@gmail.com
query@rangashree.in